ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 3, May 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

गोदान - भारतीय ग्राम समाज एवं परिवेश का सजीव चित्रण

Bhuwnesh Kumar Parihar

Assistant Professor in Hindi, Govt. College, Sambhar Lake, Jaipur, Rajasthan, India

सार

गोदान, प्रेमचन्द का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है। कुछ लोग इसे उनकी सर्वोत्तम कृति भी मानते हैं। इसका प्रकाशन १९३६ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई द्वारा किया गया था। इसमें भारतीय ग्राम समाज एवं परिवेश का सजीव चित्रण है। गोदान ग्राम्य जीवन और कृषि संस्कृति का महाकाव्य माना जाता है। इसमें प्रगतिवाद, गांधीवाद और मार्क्सवाद (साम्यवाद) का पूर्ण परिप्रेक्ष्य में चित्रण हुआ है।[1]

गोदान हिंदी उपन्यास के विकास का उज्वलतम प्रकाशस्तंभ है। गोदान के नायक और नायिका होरी और धनिया के परिवार के रूप में हम भारत की एक विशेष संस्कृति को सजीव और साकार पाते हैं, ऐसी संस्कृति जो अब समाप्त हो रही है या हो जाने को है, फिर भी जिसमें भारत की मिट्टी की सोंधी सुबास भरी है। प्रेमचंद ने इसे अमर बना दिया है।[2]

परिचय

गोदान प्रेमचंद का हिंदी उपन्यास है जिसमें उनकी कला अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँची है। गोदान में भारतीय किसान का संपूर्ण जीवन - उसकी आकांक्षा और निराशा, उसकी धर्मभीरुता और भारतपरायणता के साथ स्वार्थपरता ओर बैठकबाजी, उसकी बेबसी और निरीहता- का जीता जागता चित्र उपस्थित किया गया है। उसकी गर्दन जिस पैर के नीचे दबी है उसे सहलाता, क्लेश और वेदना को झूठलाता, 'मरजाद' की झूठी भावना पर गर्व करता, ऋणग्रस्तता के अभिशाप में पिसता, तिल तिल शूलों भरे पथ पर आगे बढ़ता, भारतीय समाज का मेरुदंड यह किसान कितना शिथिल और जर्जर हो चुका है, यह गोदान में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। नगरों के कोलाहलमय चकाचौंध ने गाँवों की विभूति को कैसे ढँक लिया है, जमींदार, मिल मालिक, पत्रसंपादक, अध्यापक, पेशेवर वकील और डाक्टर, राजनीतिक नेता और राजकर्मचारी जोंक बने कैसे गाँव के इस निरीह किसान का शोषण कर रहे हैं और कैसे गाँव के ही महाजन और पुरोहित उनकी सहायता कर रहे हैं, गोदान में ये सभी तत्व नखदर्पण के समान प्रत्यक्ष हो गए हैं। गोदान वास्तव में २०वीं शताब्दी की तीसरी और चौथी दशाब्दियों के भारत का ऐसा सजीव चित्र है, जैसा हमें अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

गोदान में बहुत सी बातें कही गई हैं। जान पड़ता है प्रेमचंद ने अपने संपूर्ण जीवन के व्यंग और विनोद, कसक और वेदना, विद्रोह और वैराग्य, अनुभव और आदर्श् सभी को इसी एक उपन्यास में भर देना चाहा है। कुछ आलोचकों को इसी कारण उसमें अस्तव्यस्तता मिलती है। उसका कथानक शिथिल, अनियंत्रित और स्थान-स्थान पर अति नाटकीय जान पड़ता है। ऊपर से देखने पर है भी ऐसा ही है, परंतु सूक्ष्म रूप से देखने पर गोदान में लेखक का अद्भुत उपन्यास-कौशल दिखाई पड़ेगा क्योंकि उन्होंने जितनी बातें कहीं हैं वे सभी समुचित उत्थान में कहीं गई हैं। प्रेमचंद ने एक स्थान पर लिखा है - 'उपन्यास में आपकी कलम में जितनी शक्ति हो अपना जोर दिखाइए, राजनीति पर तर्क कीजिए, किसी महफिल के वर्णन में १०-२० पृष्ठ लिख डालिए (भाषा सरस होनी चाहिए), कोई दूषण नहीं।' प्रेमचंद ने गोदान में अपनी कलम का पूरा जोर दिखाया है। सभी बातें कहने के लिये उपयुक्त प्रसंगकल्पना, समुचित तर्कजाल और सही मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रवाहशील, चुस्त और दुरुस्त भाषा और वणर्नशैली में उपस्थित कर देना प्रेमचंद का अपना विशेष कौशल है और इस दृष्टि से उनकी तुलना में शायद ही किसी उपन्यास लेखक को रखा जा सकता है।

जिस समय प्रेमचन्द का जन्म हुआ वह युग सामाजिक-धार्मिक रुढ़िवाद से भरा हुआ था। इस रुढ़िवाद से स्वयं प्रेमचन्द भी प्रभावित हुए। जब अपने कथा-साहित्य का सफर शुरु किया अनेकों प्रकार के रुढ़िवाद से ग्रस्त समाज को यथाशक्ति कला के शस्त्र द्वारा मुक्त कराने का संकल्प लिया। अपनी कहानी के बालक के माध्यम से यह घोषणा करते हुए कहा कि "मैं निरर्थक रूढ़ियों और व्यर्थ के बन्धनों का दास नहीं हूँ।"

प्रेमचन्द और शोषण का बहुत पुराना रिश्ता माना जा सकता है। क्योंकि बचपन से ही शोषण के शिकार रहे प्रेमचन्द इससे अच्छी तरह वाकिफ हो गए थे। समाज में सदा वर्गवाद व्याप्त रहा है। समाज में रहने वाले हर व्यक्ति को किसी न किसी वर्ग से जुड़ना ही होगा।

प्रेमचन्द ने वर्गवाद के खिलाफ लिखने के लिए ही सरकारी पद से त्यागपत्र दे दिया। वह इससे सम्बन्धित बातों को उन्मुख होकर लिखना चाहते थे। उनके मुताबिक वर्तमान युग न तो धर्म का है और न ही मोक्ष का। अर्थ ही इसका प्राण बनता जा रहा है। आवश्यकता के अनुसार अर्थोपार्जन सबके लिए अनिवार्य होता जा रहा है। इसके बिना जिन्दा रहना सर्वथा असंभव है।

वह कहते हैं कि समाज में जिन्दा रहने में जितनी कठिनाइयों का सामना लोग करेंगे उतना ही वहाँ गुनाह होगा। अगर समाज में लोग खुशहाल होंगे तो समाज में अच्छाई ज्यादा होगी और समाज में गुनाह नहीं के बराबर होगा। प्रेमचन्द ने शोषितवर्ग के लोगों को उठाने का हर संभव प्रयास किया। उन्होंने आवाज लगाई "ए लोगों जब तुम्हें संसार में रहना है तो जिन्दों की तरह रहो, मुर्दों की तरह जिन्दा रहने से क्या फायदा।"

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में शोषक-समाज के विभिन्न वर्गों की करतूतों व हथकण्डों का पर्दाफाश किया है।

विचार-विमर्श

उपन्यास वे ही उच्च कोटि के समझे जाते हैं जिनमें आदर्श तथा यथार्थ का पूर्ण सामंजस्य हो। 'गोदान' में समान्तर रूप से चलने वाली दोनो कथाएं हैं - एक ग्राम्य कथा और दूसरी नागरी कथा, लेकिन इन दोनो कथाओं में परस्पर सम्बद्धता तथा सन्तुलन पाया जाता है। ये दोनो कथाएं इस महाकाव्य की दुर्बलता नहीं वरन, सशक्त विशेषता है।

यदि हमें तत्कालीन समय के भारत वर्ष को समझना है तो हमें निश्चित रूप से गोदान को पढना चाहिए इसमें देश-काल की परिस्थितियों का सटीक वर्णन किया गया है। कथा नायक होरी की वेदना पाठको के मन में गहरी संवेदना भर देती है। संयुक्त परिवार के विघटन की पीड़ा होरी को तोड़ देती है परन्तु गोदान की इच्छा उसे जीवित रखती है और वह यह इच्छा मन में लिए ही वह इस दुनिया से कूच कर जाता है।

गोदान औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत किसान का महाजनी व्यवस्था में चलने वाले निरंतर शोषण तथा उससे उत्पन्न संत्रास की कथा है। गोदान का नायक होरी एक किसान है जो किसान वर्ग के प्रतिनिधि के तौर पर मौजूद है। 'आजीवन दुर्धर्ष संघर्ष के बावजूद उसकी एक गाय की आकांक्षा पूर्ण नहीं हो पाती'। गोदान भारतीय कृषक जीवन के संत्रासमय संघर्ष की कहानी है।

'गोदान' होरी की कहानी है, उस होरी की जो जीवन भर मेहनत करता है, अनेक कष्ट सहता है, केवल इसलिए कि उसकी मर्यादा की रक्षा हो सके और इसीलिए वह दूसरों को प्रसन्न रखने का प्रयास भी करता है, किंतु उसे इसका फल नहीं मिलता और अंत में मजबूर होना पड़ता है, फिर भी अपनी मर्यादा नहीं बचा पाता। परिणामतः वह जप-तप के अपने जीवन को ही होम कर देता है। यह होरी की कहानी नहीं, उस काल के हर भारतीय किसान की आत्मकथा है। और इसके साथ जुड़ी है शहर की प्रासंगिक कहानी। 'गोदान' में उन्होंने ग्राम और शहर की दो कथाओं का इतना यथार्थ रूप और संतुलित मिश्रण प्रस्तुत किया है। दोनों की कथाओं का संगठन इतनी कुशलता से हुआ है कि उसमें प्रवाह आद्योपांत बना रहता है। प्रेमचंद की कलम की यही विशेषता है।

इस रचना में प्रेमचन्द का गांधीवाद से मोहभंग साफ-साफ दिखाई पड़ता है। प्रेमचन्द के पूर्व के उपन्यासों में जहाँ आदर्शवाद दिखाई पड़ता है, गोदान में आकर यथार्थवाद नग्न रूप में परिलक्षित होता है। कई समालोचकों ने इसे महाकाव्यात्मक उपन्यास का दर्जा भी दिया है। साहित्यकार जब किसी विषय पर लिखता है तो उसका कोई ना कोई उद्देश्य अवश्य होता है फिर उपन्यास तो साहित्य की एक ऐसी विधा है जो जीवन के विविध रंगों को हमारे सामने प्रस्तुत करती है | उपन्यास में जीवन की विभिन्न स्थितियों का वर्णन होता है | वे स्थितियां-परिस्थितियां अच्छी भी हो सकती हैं और बुरी भी | प्रायः बुरी परिस्थितियाँ उपन्यास में ध्यानाकर्षण का केंद्र बन जाती हैं | यही उपन्यास में वर्णित समस्याएं होती हैं और इनसे ही उपन्यास का मूल भाव या उद्देश्य उभरकर सामने आता है | इस विषय में गोदान (Godan) कोई अपवाद नहीं है |

मुंशी प्रेमचंद (Munshi Premchand) जी ने अपने उपन्यासों में समाज में प्रचलित अनेक समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई है | उनकी कोई भी रचना ऐसी नहीं है जो उद्देश्यपरक न हो | कुछ रचनाओं में वे आदर्शवादी हैं तो वे नैतिक संदेश देते हैं और कुछ रचनाओं में वे यथार्थवादी हैं तो वे जीवन व समाज में व्याप्त बुराइयों की तरफ पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं और उनको दूर करने का पाठकों से आग्रह करते हैं परंतु यह आग्रह है स्पष्ट नहीं है वरन पाठक खुद ही उन बुराइयों से नफरत करने लगता है और उन को समाप्त करने का पक्षधर बन जाता है |

वास्तव में प्रेमचंद (Premchand) जी कलम के सिपाही हैं जो समाज में व्याप्त बुराइयों से लड़ते हुए दिखाई देते हैं |

जहां तक गोदान (Godan) की बात है गोदान एक वृहद उपन्यास है | एक ऐसा उपन्यास है जिसमें एक साथ समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों का समावेश हो गया है | वस्तुतः प्रेमचंद (Premchand) समाज में आमूलचूल परिवर्तन लाना चाहते हैं परंतु वे ऐसा स्पष्ट रूप से आग्रह ना करके समाज में व्याप्त बुराइयों के दुष्प्रभावों को दिखाते हैं | वे दिखाते हैं कि किस प्रकार समाज की अनेक प्रथाएं होरी जैसे किसानों के लिए दमन और शोषण का साधन बन गई हैं |

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

परिणाम

गोदान उपन्यास में वर्णित समस्याओं को दो भागों में बांटा जा सकता है – (क) ग्रामीण जीवन की समस्याएं तथा (ख) शहरी जीवन की समस्याएं |

(क) ग्रामीण जीवन की समस्याएं

गोदान उपन्यास में ग्रामीण जीवन की कथा मूलत: होरी व उसकी पत्नी धनिया के जीवन पर केंद्रित है | होरी एक छोटे से गांव बेलारी का निवासी है | यह गांव रायसाहब अमरपाल सिंह की जमींदारी में आता है | इस गांव में अधिकांश किसान हैं व अनेक जातियों के लोग रहते हैं – बढ़ाइ, लुहार, साहूकार, ब्राह्मण और चमार आदि |

गोदान में ग्रामीण जीवन की निम्नलिखित समस्याएं वर्णित हैं :-

1. ऋण-समस्या

गोदान (Godan) की मूल समस्या ऋण संबंधी समस्या है | होरी जैसे किसानों को जमींदार राय साहब दोनों हाथों से लूटते हैं | लगान, बेगार, नजराना, शगुन आदि न जाने कितनी प्रथाएं हैं जिनके माध्यम से किसानों को लूटा जाता है | वह मजबूर होकर यह सब चुकाते हैं | कई बार उन्हें साहूकारों से ऋण लेना पड़ता है | इस ऋण पर ब्याज बढ़ता जाता है | फिर यह ऋण कभी नहीं उतरता | उनका शोषण करने वाला गांव में केवल एक मगरमच्छ नहीं बल्कि दातादिन, झिंगुरी सिंह, सहुआइन दुलारी, नोखे राम आदि अनेक हैं | होरी (Hori) अकेला ही कर्जदार नहीं है बल्कि गांव के अन्य किसान भी इसी प्रकार ऋण के बोझ से दबे हैं | उनका ऋण भी लगातार बढ़ता जा रहा है | ऋण चुकाने की चिंता केवल होरी (Hori) की नहीं उस जैसे अनेक किसानों की है | एक स्थान पर लेखक कहता है – " उसे संतोष था तो यही कि यह विपत्ति अकेले उसी के सिर पर न थी | प्राय: सभी किसानों का यही हाल था |"

अधिकांश की दशा तो उससे भी बदतर थी | शोभा और हीरा को होरी से अलग हुए अभी कुल तीन साल ही हुए थे मगर दोनों पर चार-चार सौ रुपये का बोझ लद लग गया था | झींगुर दो हल की खेती करता है परंतु उस पर भी एक हजार का ऋण है | जियावन मेहतो के घर भिखारी भी भीख नहीं पाता |

परंतु किसानों की इस ऋण की समस्या को प्रेमचंद (Premchand) ने मुख्यत: होरी के माध्यम से स्पष्ट किया है | होरी ऋण से इतना दब जाता है कि उसे बेदखली से बचने के लिए मानो अपनी बेटी रूपा को बेचना पड़ता है | वह एक प्रौढ़ व्यक्ति रामसेवक से रूपा का विवाह कर देता है और उससे 200 रुपये ले लेता है |

इस प्रकार गोदान उपन्यास में मुख्य रूप से ऋण की समस्या का चित्रण किया गया है | अन्य सभी समस्याओं के मूल में यही ऋण की समस्या है |

2. शोषण-समस्या

जमींदार प्रथा में शोषण अपने चरम पर था | दीन-हीन व बेबस व्यक्ति का चारों तरफ से शोषण किया जाता था | होरी एक गरीब व ईमानदार किसान है परंतु सभी उसका शोषण करते हैं | होरी के अतिरिक्त धनिया, हीरा, शोभा, सिलिया आदि सभी का किसी ने किसी प्रकार से शोषण होता है | इसका मूल कारण है उनकी रूढ़िवादिता, धर्मांधता व मर्यादा का बंधन | किसान बेचारा गर्मी-सर्दी, आंधी, लू, वर्षा के थपेड़ों को सहकर खेत में अन्न उपजाता है परंतु उसका अन्न खेतों से ही उठ जाता है | जमींदार, पटवारी, पंडित, दरोगा सभी तो उसको लूटते हैं |

रामसेवक एक स्थान पर कहता है – " थाना पुलिस कचहरी सब हैं हमारी रक्षा के लिए लेकिन रक्षा कोई नहीं करता | चारों तरफ से लूट है | जो गरीब है, बेबस है, उसकी गर्दन काटने के लिए सभी तैयार रहते हैं |"

वस्तुतः यह शोषण इतना अधिक था कि ग्राम की दशा बहुत दुखद थी होरी जैसे किसान अपना सब कुछ लुटा बैठे थे |

3. अछूत-समस्या

अस्पृश्यता की समस्या प्रेमचंद (Premchand) के युग से भी बहुत पुरानी है | प्रेमचंद ने अपने अनेक उपन्यासों में इस बुराई पर आघात किया है | उन्होंने अपने आप को श्रेष्ठ समझने वाले ब्राह्मणों व पंडितों के काले कारनामों को अपने उपन्यासों में उजागर किया है | गोदान (Godan) उपन्यास में भी इस समस्या पर पर्याप्त विचार किया गया है | मातादीन ब्राह्मण है और सीलिया चमारिन | मातादीन सीलिया की मजबूरी का लाभ उठाकर अपने प्रेम-जाल में उसे फंसा लेता है | वह अपने जनेऊ की कसम खाकर उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करता है परंतु सिलिया का सतीत्व लूटकर उसे कहीं का नहीं छोड़ता और उसे स्वीकार करने से मना कर देता है परंतु प्रेमचंद इस समस्या को यहीं तक सीमित नहीं रखता | उनकी नजर में ऐसे ब्राह्मणों को सबक अवश्य मिलना चाहिए यही कारण है कि एक दिन सिलिया की मां के साथ कुछ चमार आते हैं और मातादीन की जनेऊ तोड़ देते हैं | उसकी खूब दुर्गति करते हैं उसके मुंह में हड्डी देकर उसका ब्राह्मणत्व नष्ट कर देते हैं |

होरी ब्राह्मणों के प्रति श्रद्धा रखता है परंतु मातादीन की कहानी सुनकर वह भी उसको धिक्कारने लगता है – " कसाई कहीं का कैसा तिलक लगाए हुए हैं | मानो भगवान का असली भगत है | रंगा हुआ सियार |"
इस प्रकार प्रेमचंद ने गोदान उपन्यास में तथाकथित श्रेष्ठ जातियों को बेनक़ाब किया है |
शहरों में भी छुआछूत है | वहां अछूतों को रहने के लिए न रहने योग्य स्थान दिया जाता है | यही कारण है कि शहर में गोबर को एक छोटी अंधेरी कोठरी में रहना पड़ता है | प्रेमचंद ने इस अछूत समस्या का निराकरण तो नहीं किया परंतु यह दर्शाने की कोशिश अवश्य की कि श्रेष्ठ जातियों के लोग एक तरफ तो निम्न जातियों को अछूत मानते हैं और दूसरी तरफ उनसे अपने खेतों-कारखानों में नाममात्र वेतन देकर काम करवाते हैं, उनकी बहू-बेटियों पर बुरी नजर रखते हैं |

4. अंतरजातीय विवाह की समस्या
प्रेमचंद (Premchand) ने गोदान (Godan) उपन्यास में कुछ उपकथाओं के माध्यम से अंतरजातीय विवाह की समस्या को भी उजागर किया है क्योंकि उस समय इस प्रकार के विवाह मान्य नहीं थे | ऐसे विवाह करने वालों का सामाजिक बहिष्कार किया जाता था | गोबर मेहतो है तथा झुनिया अहिरन | गोबर और झुनिया का परस्पर प्रेम हो जाता है | झुनिया गर्भवती हो जाती है और गोबर शहर भाग जाता है | एक बार तो होरी और धनिया भी झुनिया को अपने घर शरण नहीं देना चाहते लेकिन बाद में होरी दयामूर्ति होने के कारण झुनिया को अपने घर में शरण देता है | इसका भयंकर परिणाम होरी को भुगतना पड़ता है | पंच उस पर ₹100 नकद तथा 30 मन अनाज का दंड लगाते हैं | होरी असमर्थ होते हुए भी यह दंड स्वीकार कर लेता है |
अंतरजातीय विवाह के अनेक उदाहरण इस उपन्यास में मिलते हैं – पंडित मातादीन व सिलिया चमारिन, गौरीराम मेहतो व चमारिन का विवाह, झिंगुरी सिंह व ब्राह्मणी का विवाह आदि |
मुंशी प्रेमचंद(Munshi Premchand)p इस अंतर्जातीय विवाह-परंपरा का समर्थन करते हुए नजर आते हैं | वे यह काम अपने उपन्यास के कुछ पात्रों के संवादों के माध्यम से करते हैं | एक स्थान पर मातादीन कहता है – " मैं ब्राह्मण नहीं चमार ही रहना चाहता हूँ | जो अपना धर्म माने वह ब्राह्मण, जो धर्म से मुंह मोड़े वह चमार |"

5. नारी-दुर्दशा
गोदान उपन्यास में नारी-दुर्दशा के भयावह चित्र मिलते हैं | धनिया, झुनिया, सिलिया आदि सभी नारी पात्र प्रताड़ित हैं | निम्न वर्ग की नारियां तो प्रताड़ित हैं ही बड़े महाजनों, जमींदारों और साहूकारों की नारियों भी प्रताड़ित हैं | मानो सभी मर्यादाएं, सभी बंधन, सभी रीति-रिवाज और परंपराएं केवल नारी शोषण के शस्त्र मात्र हैं | कोई गरीबी के कारण मजबूर होकर अपनी बेटियों को बेच रहा है, कोई लालच के कारण | कोई अपने धन और पद की धौंस दिखा कर नारी का दैहिक शोषण कर रहा है तो कोई अपनी वर्णगत श्रेष्ठता के कारण किसी निर्धन स्त्री पर नजर गड़ाए है | चाहे कोई शोषक हो या शोषित | पिसती केवल नारी ही है | उपन्यास में ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं जहां नारी का यौन शोषण होता है और ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जब अनेक पात्रों की कुदृष्टि नारी की देह पर रहती है | यौन शोषण की पीड़ा और भयानक परिणामों को संभवत: पाठक भली-भांति समझ सकें लेकिन उस मानसिक शोषण की पीड़ा को समझ पाना सहज नहीं जिसे रूपा, झुनिया जैसी नारी पात्रों ने इस उपन्यास में भोगा है |

(ख) शहरी जीवन की समस्याएं
नागरिक जीवन में प्रेमचंद (Premchand) ने दर्शनशास्त्र के प्रवक्ता प्रोफ़ेसर मेहतो, डॉक्टर मिस मालती, जमींदार राय साहब अमरपाल सिंह, मिल मालिक मिस्टर खन्ना आदि पात्रों का उल्लेख किया है | इन के माध्यम से प्रेमचंद ने निम्नलिखित समस्याओं को चित्रित किया है :-
1. जमींदार वर्ग की समस्या
उपन्यास में रायसाहब अमरपाल सिंह अवध प्रांत के जमींदार हैं | उनके अधीन सभी किसान उनका कहना मानते हैं | रायसाहब के कारिंदे किसानों से लगान, नजराना आदि वसूल करते हैं | किसानों से इतना अधिक वसूला जाता था जितना उन्हें खेती से नहीं मिलता था | अतः सभी किसान दुखी थे |
इसमें कोई संदेह नहीं कि जमींदार वर्ग किसानों का शोषण करता था परंतु जमींदारों की भी अपनी कुछ समस्याएं थी | उन्हें भी बड़े अफसरों को रिश्वत देनी पड़ती थी | बड़े अफसरों के दौरे पर आने पर व शिकार खेलने जाने पर जमींदार उनके पीछे लगे रहते थे |जिस प्रकार रायसाहब दूसरों का शोषण करते थे उसी प्रकार रायसाहब जैसे जमींदारों का भी शोषण होता था परंतु यह सारा धन आगे किसानों से प्राप्त करते थे भले ही उनके पास कुछ हो या ना हो |
मुंशी प्रेमचंद(Munshi Premchand) इस समस्या का समाधान देते हुए कहते हैं कि यदि जमींदारी प्रथा समाप्त कर दी जाए तो न तो इन जमींदारों को कष्ट होगा और न ही किसानों को |

2. मिल मजदूरों की समस्याएं
गोदान उपन्यास में मिस्टर खन्ना चीनी मिल के मालिक हैं | उनकी मिल में वेतन को लेकर मजदूर हड़ताल कर देते हैं | मिस्टर खन्ना मजदूरी कम देते हैं तो हड़ताल भयंकर रूप धारण कर लेती है | जिसका प्रभाव मिस्टर खन्ना पर भी पड़ता है और मिल मजदूरों पर भी | मजदूरों की नौकरी चली जाती है | गोबर की नौकरी भी चली जाती है और उसे चोट भी लगती है |

इस प्रकार गोदान उपन्यास में मजदूरों की समस्याओं को भी उठाया गया है | उनके दर्द को भी अभिव्यक्ति मिली है परंतु कोई समाधान नहीं निकल पाता | जीत पूंजीपतियों की ही होती है परंतु मुंशी प्रेमचंद(Munshi Premchand) मजदूरों की समस्याओं को पाठकों तक लाने में सफल सिद्ध हुए हैं |

3. नारी-शिक्षा

प्रेमचंद (Premchand) से पूर्व ही भारत में नारियाँ उच्च शिक्षा ग्रहण करने लगी थी परंतु ऐसी नारियों की संख्या बहुत कम थी | मिस मालती इंग्लैंड में पढ़ी है और एम बी बी एस की परीक्षा पास करके डॉक्टर बन गई है | वह पाश्चात्य रंग में रंगी है | परंतु प्रेमचंद ऐसा नहीं चाहते | वह नारी शिक्षा के तो समर्थक हैं परंतु पाश्चात्य सभ्यता के नहीं |

एक स्थान पर प्रोफेसर मेहता कहते हैं – " मैं नहीं कहता देवियों को विद्या की आवश्यकता नहीं है | है और पुरुषों से अधिक है, मैं नहीं कहता देवियों को शक्ति की आवश्यकता नहीं है | है और पुरुषों से अधिक है लेकिन वह विद्या और वह शक्ति नहीं जिससे पुरुषों ने संसार को हिंसा-क्षेत्र बना डाला है |"

वस्तुतः प्रेमचंद (Premchand) स्त्रियों को शिक्षित भी बनाना चाहते थे और उन्हें सेवा व त्याग की मूर्ति भी बनाना चाहते हैं |

4. नारी-स्वतंत्रता और अधिकारों की समस्या

प्रेमचंद (Premchand) ने नारी-स्वतंत्रता और अधिकारों की समस्या को एक अलग ढंग से लिया है | प्रेमचंद नारी-स्वतंत्रता के पक्षधर थे परंतु उन्हें वे अधिकार न देना चाहते थे जो पुरुषों को प्राप्त हैं | वे नहीं चाहते थे कि नारी पाश्चात्य-सभ्यता से परिपूर्ण हो | वे चाहते थे कि नारी पर कोई अत्याचार न हो, अनुचित बंधन न हो परंतु एक मर्यादा अवश्य हो |

मिस्टर खन्ना की पत्नी गोविंदी समझदार भारतीय नारी है | वह पति द्वारा तिरस्कृत है परंतु प्रोफ़ेसर मेहता उसे न्यायालय जाने से रोकते हैं और उसे गृहस्थ जीवन को सार्थक बनाने का उपदेश देकर घर वापस भेज देते हैं |

अतः प्रेमचंद नारी स्वतंत्रता तो चाहते हैं परंतु उसे पाश्चात्य संस्कृति से दूर रखना चाहते हैं | वास्तव में मुंशी प्रेमचंद(Munshi Premchand) जी की नारी-स्वतंत्रता की परिभाषा उस परिभाषा से भिन्न है जो प्राय: आधुनिक विचारक प्रस्तुत करते हैं | इस दृष्टिकोण से मुंशी प्रेमचंद(Munshi Premchand) कितने सही हैं यह एक अलग विषय है |

5. स्वच्छंद प्रेम की समस्या

प्रेमचंद (Premchand) ने गोदान उपन्यास में स्वच्छंद प्रेम का विरोध किया है | मिस मालती एक पाश्चात्य सभ्यता में पली नारी है | विदेशी शिक्षा के कारण वह तितली बनकर रहती है | मिल मालिक मिस्टर खन्ना उस पर लट्टू हैं | वह दिल से प्रोफेसर मेहता को चाहती है | वह स्वयं मिस्टर खन्ना से कहती है – "मैं रूपवती हूं | तुम भी मेरे चाहने वालों में से एक हो |"

परंतु प्रेमचंद (Premchand) इस प्रकार की नारी को भारतीय गुणों से युक्त नारी नहीं मानते | स्वच्छंद प्रेम उन्हें उचित प्रतीत नहीं होता | वह मालती के जीवन में परिवर्तन लाकर उसे सेवा व त्याग की मूर्ति बना देते हैं | उसकी दृष्टि में सेवा और त्याग नारी के सबसे बड़े गुण हैं | संभवत: इसी कारण प्रेमचंद ने मालती का प्रेम-संबंध प्रोफेसर मेहता से भी स्थापित नहीं करवाया |

इस प्रकार प्रेमचंद (Premchand) ने गोदान (Godan) उपन्यास में अनेक समस्याओं का वर्णन किया है | उन्होंने सभी समस्याओं का समाधान तो प्रस्तुत नहीं किया परंतु उन समस्याओं के विषय में सोचने के लिए पाठकों को मजबूर अवश्य किया है | संभवत: यही उनका उद्देश्य है कि पाठक स्वयं इन समस्याओं के निराकरण के लिए क्रांतिकारी कदम उठाएं | उपन्यास में कुछ ऐसी बड़ी समस्याओं को भी प्रस्तुत किया गया है जिनके निराकरण के लिए बड़े आंदोलन की आवश्यकता है लेकिन कुछ ऐसी छोटी-छोटी समस्याएं भी हैं जिनका निराकरण केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन लाकर कर सकते हैं |

निष्कर्ष

प्रेमचंद (Premchand) का उपन्यास 'गोदान' आज भी नए परिप्रेक्ष्य में विचार के लिए प्रेरित करता है। यह औपनिवेशिक युग में किसानों के शोषण की गाथा ही नहीं, समकालीन नव-उपनिवेशवाद, भूमंडलीकरण की चुनौतियों और उसके विमर्शों से सामना करने वाली सच्ची रचना भी है। गोदान (Godan) में प्रेमचंद जी ने हमारे समाज की कुंठा , निराशा , ऋणग्रस्तता आदि का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया है ! प्रेमचंद जी ने गोदान के जरिये यह बताने का प्रयास किया है कि भारतीय किसान साहुकारो के चंगुल में फसकर कर्ज का शिकार रहा है और अपने परिवार का पेट पालने की चिंता में ही अपना जीवन गुजर देता है !

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. Chatterjee, Saibal (15 August 2004). "Gulzar's vision of timeless classics". The Tribune. अभिगमन तिथि 25 August 2021.
2. ↑ "गोदान उपन्यास की रचना का रहस्य". जागरण. मूल से 27 मार्च 2015 को पुरालेखित.

3. सरकार, अनुपमा (7 मार्च 2013)। "प्रेमचंद द्वारा गोदान" । आत्मा की लिपि ।(समीक्षा)
4. हिंदुस्तान बुक्स पर गोदान
5. रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 17. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
6. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 18. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
7. ↑ रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 15
8. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 19. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
9. ↑ बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५६.
10. ↑ "Munshi Premchand: गांधी और प्रेमचंद का साथ-साथ चलना हिंदी साहित्य में एक महान उपलब्धि". Dainik Jagran. अभिगमन तिथि 2020-07-31.
11. ↑ बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५७.
12. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 20. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
13. ↑ यह उपन्यास उर्दू साप्ताहिक 'आवाजे खल्क' में 8 अक्टूबर 1903 से 1 फ़रवरी 1905 तक धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक का नाम छपा था- मुंशी धनपतराय उर्फ नवाबराय इलाहाबादी। बाद में स्वयं प्रेमचंद ने इसका हिन्दी तर्जुमा 'देवस्थान रहस्य' नाम से किया, जो उनके पुत्र अमृतराय द्वारा उनके आरंभिक उपन्यासों के संकलन 'मंगलाचारण' में संकलित है।
14. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 21. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
15. ↑ NEWS, SA (2022-07-30). "Munshi Premchand Jayanti (मुंशी प्रेमचंद जयंती): 'गोदान' उपन्यास के रचयिता प्रेमचंद के बारे में जाने सम्पूर्ण जानकारी". SA News Channel (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2022-07-30.
16. ↑ सिंह, डॉ॰बच्चन (1972). प्रतिनिधि कहानियाँ. वाराणसी: अनुराग प्रकाशन, विशालाक्षी, चौक. पृ॰ 9.
17. ↑ अमृतराय (1976). प्रेमचंद क़लम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन. पृ॰ 616-17.
18. ↑ वीर भारत, तलवार (2008). किसान राष्ट्रीय आन्दोलन और प्रेमचन्द:1918-22. नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृ॰ 19-20.

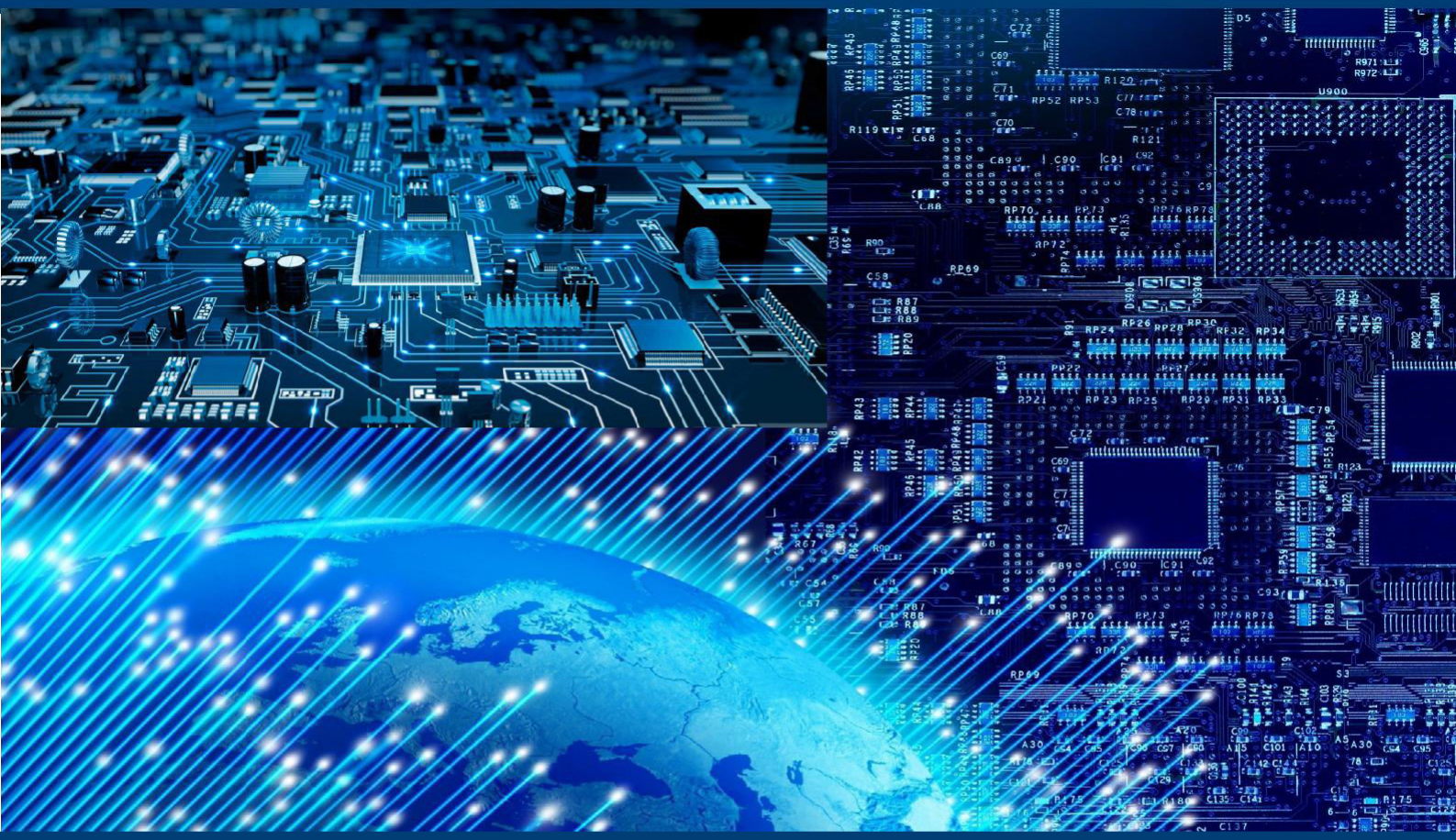

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |